उपसंहार

उपसंहार

प्रागएतिहासिक काल से ही भारत वर्ष में अनेक विषय के ऊपर संशोधन कार्य होता रहा है। इसी कारण से विविध शास्त्रों का निर्माण भारत वर्ष में हुए, जिसमें आयुर्वेद शास्त्र, पाकशास्त्र, ध्वनिशास्त्र, कलाशास्त्र, संगीत शास्त्र इत्यादि। शोधार्थी संगीत कला के तबला वाद्य क्षेत्र में कार्यरत होने के कारण प्राचीन संगीत शास्त्रों में उपलब्ध संगीत, वाद्य, नृत्य, नाट्य आदि कलाओं में उपयोगी तालशास्त्र का अध्यापन करके वर्तमान परिपेक्ष में तालशास्त्र की उपयोगिता के सन्दर्भ में शोधकार्य किया है। शोधार्थी ने भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र में वर्णित तालशास्त्र की वर्तमान उपयोगिता के सन्दर्भ में कार्य प्रस्तुत किया है। भारतीय संगीत में ताल शास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है। यह ताल शास्त्र कि परम्परा वैदिक काल से विद्यमान है। वेदों एवं पुराणों में वर्णित संगीत विद्या का निर्माण हो, इस उद्देश्य से पंडित भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र की रचना की। आज भी भरत मुनि रचित नाट्य शास्त्र संगीत क्षेत्र में सर्वमान्य ग्रन्थ माना जाता है। इसलिए नाट्यशास्त्र को पंचमवेद भी कहा जाता है। समय परिवर्तन के साथ–साथ प्राचीन संगीत के स्वरूपों में अंतर आया और वर्तमान समय में जिस संगीत को हम जानते है, कि वह संगीत बदलते स्वरूपों में यहाँ तक पंहुचा है।

आज संगीत शास्त्र मे ताल शास्त्र विस्तृत होता जा रहा है। संगीत में नवीन प्रादुर्भाव हमें मिलता है। संगीत में अनेकोनेक प्रयोग हो रहें है, ऐसे में हमें हमारे प्राचीन तथ्यों के विषय में उचित संशोधनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है। वर्तमान तालशास्त्र विशद तालशास्त्र के रूप में प्रस्थापित है। किन्तु हमारी प्राचीन ताल परम्परा का भी आज के सन्दर्भ में क्या महत्त्व है। नाट्यशास्त्र एक वस्तुतः संगीत की तीनों शाखाओं का भारतीय संगीत की दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। आज हमें जो भी संगीत के विषय में शास्त्रीयता प्राप्त है, वह नाट्यशास्त्र की देन है। नाट्यशास्त्र को हम एक दृष्टिकोण से नहीं देख सकते क्योंकि संगीत का कोई भी विषय ऐसा नहीं है। जिसका विवेचन नाट्यशास्त्र में न दिया गया हो। शोधार्थी ने नाट्यशास्त्र में वर्णित तालशास्त्र के विषय का चयन किया था। ताल संगीत का अभिन्न अंग है, शोधार्थी ने नाट्यशास्त्र में वर्णित ताल शास्त्र की वर्तमान उपयोगिता का वर्णन प्रस्तुत किया है। जिससे संगीत के विद्यार्थियों, कलाकारों एवं समग्र संगीतज्ञों को लाभ व एक नवीन दृष्टिकोणं ताल के विषय में

मिलेगा। शोधार्थी द्वारा यह प्रयास किया गया है, कि जहाँ–जहाँ से भी नाट्यशास्त्र सम्बन्धी जानकारी प्राप्त हुई है। उन सभी को एकत्र किया गया है और उस उपलब्ध दत्त को उसकी उपयोगिता के अनुसार अपने शोध प्रबंध स्थान दिया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में तथ्यों को विश्लेषणात्मक एवं एतिहासिक कार्य पद्धति के द्वारा प्रस्तुत किया गया है, जिस कारण इसके शोध के लिए एतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया गया है, और संगीत का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ होने के कारण इसका विश्लेषणात्मक अध्ययन इसके नवीन तथ्यों को उजागर करने के उद्देश्य से किया गया है। शोधार्थी ने इस शोध प्रबंध के अंतर्गत नाट्यशास्त्र में वर्णित तालशास्त्र का वर्णन किया है। इस कार्य का मुख्य उद्देश्य ताल शास्त्र के प्रत्येक पहलुओं को भली–भांति समझने व उजागर करने का प्रयास किया हैं, जिसे इस शोध प्रबंध के माध्यम से प्रस्तुत किया है। साथ ही शोध के माध्यम से तालशास्त्र को वर्णित किया है और उसकी वर्तमान उपयोगिता को भी साथ ही सिद्ध करते हुए, नाट्यशास्त्र के ताल शास्त्र की सम्भावनाओं को भी दर्शाया है।

प्रथम अध्याय के अर्न्तगत सर्वप्रथाम भारत की संस्कृति व उसके संगीत का परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ–साथ यह अध्याय भरत मुनि के परिचय पर आधारित है। जिसके अंतर्गत भरत शब्द का अर्थ, भरत मुनि का जन्म स्थल, नाट्यशास्त्र की पम्परा, भरत का परिचय आदि को प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय के संगीत की चर्चा की गई है। इसके पश्चात् भरत शब्द के अर्थ को वर्णित करते हुए, भरत नाम और जाति, समुदाय आदि का वर्णन किया है। इसके बाद भरत के बारे में जहाँ से भी जो जानकारी प्राप्त हो सकी, उसका अध्ययन कर उसके बारे में बताया गया है। भरत मुनि का जन्म, स्थान आदि को बताया गया है, वह कहां के निवासी थे व वह कौन थे, इसके बारे में वर्णन किया गया है और इसके पश्चात् नाट्यशास्त्र की पम्परा का वर्णन किया गया है। इसका रचना काल, व इसके लेखक के रूप में भरत की चर्चा की गई है। कृशाश्व और शिलालिन जैसे पूर्वाचार्यों की भी चर्चा की गई है। भरत का परिचय देते हुए, भरत कौन थे और इसका काल कौन सा था, इसकी पुष्टि करने का भी प्रयास किया गया है। भरत के काल को जानने के लिए सभी तथ्यों को प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया गया है। संहिता काल से लेकर भरत तक के काल को जानने का प्रयास किया गया है। नाट्यशास्त्र के प्रणेता

के रूप में भरत की भी चर्चा की गई है। इसके पश्चात् भरत मुनि के पूर्वाचार्यों व परवर्ती आचार्यों के विषय में भी बताने का प्रयास किया गया है इस प्रकार प्रथम अध्याय के मुख्य केंद्र भरत मुनि को रखते हुए, इस अध्याय को प्रस्तुत किया गया है। जिससे शोधार्थी अपने शोध कार्य की वस्तुनिष्ठता और महत्त्व को स्पष्ट कर सके।

द्वितीय अध्याय को नाट्यशास्त्र के सार के रूप में भी देखा जा सकता है। यह शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इस अध्याय के अंतर्गत मुख्य रूप से नाट्यशास्त्र की चर्चा की गई है। इस अध्याय में नाट्यशास्त्र का परिचय प्रस्तुत किया गया है। जिसके माध्यम से नाट्यशास्त्र को जानने में सहायता प्राप्त होती है। इस अध्याय में नाट्यशास्त्र का सार निहित है। इस अध्याय में नाट्यशास्त्र का परिचय देते हुए इसके रचना का समय इसके रचयिता व स्वरूप की चर्चा की गई है। इस अध्यााय के अंतर्गत नाट्यशास्त्र की रचना काल का कई तथ्यों व सक्ष्यों के साथ चर्चा की गई है व उसके विभिन्न संस्करणों के विषय में भी बताने का प्रयास किया गया है। इसके पश्चात् नाट्यशास्त्र के विषयों का संक्षेप में वर्णन किया गया है। नाट्यशास्त्र में 36 अध्यायों का वर्णन प्राप्त होता है, जिसमें से पहले अध्याय से सत्ताईसवें अध्याय तक नाट्य के विभिन्न तत्वों की चर्चा की गई है और अठाईसवें अध्याय से छत्तिसवें अध्याय तक संगीत की चर्चा प्राप्त होती है। जिसमें से इकत्तीसवां अध्याय ताल आधारित है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्रथम से छत्तीसवें अध्याय तक के सार को प्रस्तुत किया गया है, जिससे शोधार्थ नाट्यशास्त्र के स्वरूप को ताल शास्त्र के सन्दर्भ में व्यक्त कर सके और साथ ही उसके महत्त्व के विषय में जानकारी प्रस्तुत की गई है। मंगलाचरण, प्रेक्षगृह के लक्षण, रंग देवताओं की पूजा, अमृतमंथन, पूर्वरंग विधान, रसशास्त्र, भावाध्याय, उपांगाभिनय, आंगिक अभिनय, चारीविधान, मंडलविधान, गतिप्रचार आदि सभी 36 अध्यायों का विस्तारपूर्वक अध्ययन कर वर्णन प्रस्तुत किया गया हैं।

इसी प्रकार सम्पूर्ण नाट्यशास्त्र में वर्णित ताल का अध्ययन करने के पश्चात् शेधार्थी द्वारा इस तृतीय अध्याय में प्रस्तुत शोध में नाट्यशास्त्र में वर्णित ताल से संबन्धित श्लोक तथा जिन अध्यायों में ताल का वर्णन किया गया है, उनका अध्ययन तथा विवेचन किया गया है, जिनका संबन्ध ताल से है। शोध प्रबन्ध के प्रस्तुत अध्याय के अन्र्तगत आरम्भ भाग में वह सभी अध्याय सम्मलित किये गए है जिनमें किसी भी रूप में अवनद्ध वाद्य, ताल, ताल सम्बन्धित शास्त्र व ताल

शब्द का भी प्रयोग किया गया है। जिसके द्वारा ताल के विषय को ध्यानपूवर्क कुशलता के साथ समझा जा सके जो इस शोध प्रबन्ध तथा ज्ञान का विस्तार कर सके। नाट्यशास्त्र में मुख्य रूप से शोधार्थी को बारह अध्यायों के अर्न्तगत ताल सम्बन्धित जानकारी प्राप्त होती है, वह अध्याय इस प्रकार है– मंगलाचरण, प्रेक्षगृह के लक्षण, रंग देवताओं की पूजा, अमृतमंथन, पूर्वरंग विधान, चारीविधान, गतिप्रचार, कक्ष्यापरिधि तथा लोकधर्मी निरुपण, आतोद्यविधान, ध्रुवाविधान, अवनद्धातोद्य विधानाध्याय, भूमिका विकल्पाध्याय। इसके अतिरिक्त नाट्यशास्त्र के इक्कतिसवें अध्याय को व्याख्यित किया गया है। अध्याय के दूसरे भाग के अर्न्तगत तालाध्याय को वर्णित किया है, जिसमें नाट्यशास्त्र की तालों व उसके लक्षणों के साथ–साथ ध्रुवाओं के अर्न्तगत प्रयोग व सप्त गीतों के साथ नाट्य में प्रयोग व महत्व को व्याख्यित किया गया है। तथा अन्त में नाट्यशास्त्र आधारित ताल शास्त्र का वर्णन उदाहरण सहित प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है। ताल को केन्द्र में रखते हुए अध्ययन करने के पश्चात् इस बात का ज्ञान प्राप्त होता है कि संगीत का आधार ताल है संगीत की कोई विधा ताल का सर्वोच्च स्थान है। जिस भरत मुनि द्वारा भी स्वीकारा गया है व नाट्यशास्त्र के अर्न्तगत दो मुख्य ताल चच्त्पुट तथा चाचपुट व उनके समिश्रण से अन्य तीन तालों का निर्माण होता है। इस प्रकार नाट्यशास्त्र में कुल पाँच तालों का वर्णन प्राप्त होता है।

चतुर्थ अध्याय द्वारा के अर्न्तगत ताल की शाब्दिक पारिभाषा का अध्ययन विभिन्न ग्रन्थों के आधार पर की गयी है, जिसमें भरत मुनि द्वारा नाट्यशास्त्र के ताल संबंधित जो विषय है उसका आदि से अंत तक सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक रूप से ताल शास्त्र का उल्लेख किया गया है। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत सर्वप्रथम ताल की व्याख्या करते हुए, नाट्यशास्त्र तथा उसके पूर्वर्ती व परवर्ती ग्रंथों में वर्णित ताल की शाब्दिक परिभाषा का उल्लेख किया गया है। ताल की वर्तमान शाब्दिक परिभाषा के साथ उसे जोड़ने का प्रयास किया गया है। उसके पश्चात् ताल के दस–प्राणों का वर्णन किया गया है, जिसे नाट्यशास्त्र में घटक कहा गया है। उसका उल्लेख करते हुए तथा दस–प्राणों की वर्तमान में क्या उपयोगिता है तथा किस रूप में प्रयोग हो रहा है, उसका वर्णन किया गया है तथा उसके बाद संगीत की विधाएं गायन, वादन, नृत्य और नाटक जो भरत मुनि द्वारा निर्दिष्ट है उनके ताल शास्त्र की वर्तमान में क्या उपयोगिता है, इस तथ्य को समझने का

प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है। इस प्रकार संगीत के सभी तथ्यों का अध्ययन करने के पश्चात् शोधार्थी इस निष्कर्ष को प्राप्त करता है कि नाट्यशास्त्र में वर्णित ताल की पारिभाषिक शब्दावली की धारणाएं अवश्य अलग–अलग रूप में बदलते हुए, आज तक प्रयोग होती आयीं है।

नाट्यशास्त्र आधारित यह शोधकार्य नाट्यशास्त्र पर उपल्ब्ध टीका, अनुवादों तथा नाट्यशास्त्र संबन्धित पुस्तकों के अध्ययन के पश्चात् यह कार्य किया गया है, जिससे मुख्य रूप से अभिनव गुप्त द्वारा रचित अभिनव भारतीय नामक टीका का अध्ययन तथा हिन्दी अनुवादों के रूप में सरल तथा स्पष्ट भाषा में उपलब्ध नाट्यशास्त्र के अनुवादों का अध्ययन किया गया है, जो कि ब्रजवल्लभ मिश्र तथा बाबू लाल शुक्ल शास्त्री में प्राप्त होता है, तथा इसका अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थी द्वारा नाट्यशास्त्र में वर्णित ताल की वर्तमान उपयोगिता तथा उसकी सम्भावना पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। यद्यपि नाट्यशास्त्र और उसके रचयिता भरत मुनि का मूल्यांकन किसी एक शोध ही नहीं बल्कि अनेकों–अनेक शोध द्वारा भी नहीं किया जा सकता। नाट्यशास्त्र का एक–एक अध्याय इतना गूढ़ है कि इसके एक अध्याय पर ही पूरा शोधकार्य हो सकता है। प्रस्तुत शोधकार्य में नाट्यशास्त्र में वर्णित ताल पक्ष पर प्रकाश डाला गया है। सभी अध्यायों में वर्णित ताल का नियमित अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रचलित ताल शास्त्र जो भारतीय संगीत पद्धति में प्रयोग होता है, उसका आधार नाट्यशास्त्र में वर्णित मार्गी ताल ही है।

****